पारि पुनर्स्थापन वन अनुसन्धान केन्द्र प्रयागराज

FOREST RESEARCH CENTRE FOR ECO-REHABILITATION PRAYAGRAJ

WEBINAR SERIES ON
IMPACT OF TECHNOLOGY DISSEMINATION ON ENHANCEMENT OF LIVELIHOOD SECURITY THROUGH FORESTRY ENDEAVORS

A unique Webinar Series entitled **"Impact of Technology Dissemination on Enhancement of Livelihood Security through Forestry Endeavors"** has been started jointly by Forest Research Centre for Eco-Rehabilitation, Prayagraj and Forest Research Centre for Livelihood Extension, Agartala.

Session-I of the series was held on 20 October, 2020 in which more than 50 beneficiaries shared their views on technologies dissemination by the Rain Forest Research Institute, Jorhat, Forest Research Centre for Bamboo & Rattan, Aizawl, Forest Research Centre for Livelihood Extension, Agartala and Forest Research Centre for Eco-Rehabilitation, Prayagraj.

The Webinar was inaugurated by Dr. Sudhir Kumar, D.D.G. (Extension), ICFRE, Dehradun who in his inaugural address emphasized on forestry based livelihood innovation by institutes/Centres under Indian Council of Forestry Research and Education, Dehradun and stressed upon rural development with environmental conservation.

At the outset introduction of the Webinar was given by Dr. Sanjay Singh, Head, FRCER, Prayagraj which was followed by welcome address by Dr. A. K. Pandey, ADG (Extension) and address by Dr. R. C. Jayraj, Director, Rain Forest Research Institute, Jorhat. Dr. A. K. Pandey apprised about various extension strategies of the council such as Van Vigyan Kendra, Demo Village, and Direct to Consumers etc.

Dr. R. C. Jayraj informed about the extension initiatives of RFRI, Jorhat and shared some success stories particularly bamboo value addition and handicraft promotion and lac cultivation in Arunanchal Pradesh. Vote of thanks was proposed by Mr. Pawan Kumar Kaushik, Scientist-F and Head, Forest Research Centre for Livelihood Extension, Agartala.

The day long Webinar had four interactive sessions centered on extension efforts of Rain Forest Research Institute, Jorhat, Forest Research Centre for Eco-Rehabilitation, Prayagraj, Forest Research Centre for Livelihood Extension, Agartala and Forest Research Centre for Bamboo Rattan, Aizawl, respectively. Key extension efforts of the respective Institutions was presented by Rajib Kumar Kalita, Scientist-F, RFRI, Jorhat, Dr. Sanjay Singh, FRCER Prayagraj, Mr. Pawan Kumar Kaushik, FRCLE, Agartala and Sandeep Yadav, Scientist, FRCBR, Aizawl. In each session presentation were also made by the beneficiaries. More than 50 beneficiaries shared their stories/interventions in the Webinar which was joined by around 500 participants from all over the country.

IMPACT OF AGROFORESTRY DISSEMINATION ON ENHANCEMENT OF
LIVELIHOOD SECURITY THROUGH FORESTRY ENDEAVOURS
(Webinar Series : Session – 01)
October 25, 2020
FRC-BR, Aizawl
FRI, Dehradun
RFRI, Jorhat
Organized by

FRC-BR, Aizawl
FRCER

बॉस हस्तनिर्मित वस्तुओं से धन अर्जन पर चर्चा

प्रयागराज। बुधवार को पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केंद्र (भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून) प्रयागराज तथा वन अनुसंधान केंद्र, अगरतला द्वारा संयुक्त रुप से अनलॉक-५ के दौरान वानिकी प्रयासों के माध्यम से आजीविका में वृद्धि विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय वेबीनार का आयोजन किया गया। अपने उद्घाटन भाषण में कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ. सुधीर कुमार, उपमहानिदेशक, विस्तार, ने भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून के अंतर्गत कार्यरत संस्थानों तथा उनके केंद्रों द्वारा वानिकी आधारित आजीविका उपार्जन पर बल दिया। जिससे ग्रामीण क्षेत्रों के आर्थिक विकास के साथ-साथ पर्यावरण सुरक्षा को भी बढ़ावा मिले। डॉ. आर. सी. जयराज, निदेशक, वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट (असम) ने बांस की विभिन्न प्रजातियों से तैयार हस्तशिल्प वस्तुओं तथा लाख की खेती से होने वाले लाभों से अवगत कराया। पवन कुमार कौशिक, वैज्ञानिक एवं आजीविका विस्तार वन अनुसंधान केंद्र, अगरतला द्वारा धन्यवाद व्यक्त किया गया। इसी क्रम में अपने नेतृत्व व्याख्यान में डॉ. संजय सिंह, प्रमुख ने लाख की खेती विषय पर चर्चा करते हुए भारत में उपलब्धि प्रतिशत के साथ-साथ इसकी कुछ प्रजातियों से भी अवगत कराया। उन्होंने प्रयागराज केंद्र की अनुसंधान पौधशाला में लाख की खेती हेतु तैयार हो रहे मॉडल से भी अवगत कराया। उन्होंने स्वालंबन रोजगार के अंतर्गत बाँस से तैयार हस्तशिल्प वस्तुओं से धन अर्जन पर विस्तृत चर्चा की। तत्पश्चात उन्होंने औषधीय पौधों के अंतर्गत सहजन पर विशेष चर्चा करते हुए उसके महत्व पर प्रकाश डाला तथा इसके रोपण हेतु सभा से अनुरोध भी किया। कार्यक्रम में केंद्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. कुमुद दुबे ने वेबीनार प्रतिभागियों को धन्यवाद देते हुए वृष्टि वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट तथा इसके अंतर्गत बांस रत्न अनुसंधान केंद्र के कार्यों तथा भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद देहरादून में उसकी भूमिका से अवगत कराया साथ ही बांस की कुछ प्रजातियों से भी रूबरू कराया। तत्पश्चात सहायक महानिदेशक विस्तार ने परिषद की स्थापना तथा इसके उद्देश्य यथा वन विज्ञान केंद्र, कृषि विज्ञान केंद्र, डेमो विलेज, वृक्ष उपजाओ मेले आदि से अवगत कराते हुए लाख की खेती से भी विशेषतः अवगत कराया। वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. अनीता तोमर ने प्रयागराज केंद्र में चल रहे अनुसंधान कार्यों के साथ विभिन्न परियोजनाओं द्वारा पूर्वी उत्तर प्रदेश में वानिकी के विकास से पर्यावरण में हस्तक्षेप से अवगत कराया।

एक दिवसीय राष्ट्रीय वेबीनार का आयोजन

ए पी सिंह

प्रयागराज (अमर स्तम्भ) पारि–पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केंद्र (भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून) प्रयागराज तथा वन अनुसंधान केंद्र, अगरतला द्वारा संयुक्त रुप से अनलॉक–5 के दौरान वानिकी प्रयासों के माध्यम से आजीविका में वृद्धि विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय वेबीनार का आयोजन किया गया। अपने उद्घाटन भाषण में कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ. सुधीर कुमार, उपमहानिदेशक, विस्तार, ने भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून के अंतर्गत कार्यरत संस्थानों तथा उनके केंद्रों द्वारा वानिकी आधारित आजीविका उपार्जन पर बल दिया। जिससे ग्रामीण क्षेत्रों के आर्थिक विकास के साथ–साथ पर्यावरण सुरक्षा को भी बढ़ावा मिले। डॉ. आर. सी. जयराज, निदेशक, वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट (असम) ने बांस की विभिन्न प्रजातियों से तैयार हस्तशिल्प वस्तुओं तथा लाख की खेती से होने वाले लाभों से अवगत कराया। पवन कुमार कौशिक, वैज्ञानिक एवं आजीविका विस्तार वन अनुसंधान केंद्र, अगरतला द्वारा धन्यवाद व्यक्त किया गया। इसी क्रम में अपने नेतृत्व व्याख्यान में डॉ. संजय सिंह, प्रमुख ने लाख की खेती विषय पर चर्चा करते हुए भारत में उपलब्धि प्रतिशत के साथ–साथ इसकी कुछ प्रजातियों से भी अवगत कराया। उन्होंने प्रयागराज केंद्र की

अनुसंधान पौधशाला में लाख की खेती हेतु तैयार हो रहे मॉडल से भी अवगत कराया। उन्होंने स्वालंबन रोजगार के अंतर्गत बाँस से तैयार हस्तशिल्प वस्तुओं से धन अर्जन पर विस्तृत चर्चा की। तत्पश्चात उन्होंने औषधीय पौधों के अंतर्गत सहजन पर विशेष चर्चा करते हुए उसके महत्व पर प्रकाश डाला तथा इसके रोपण हेतु सभा से अनुरोध भी किया। कार्यक्रम में केंद्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. कुमुद दूबे ने वेबीनार प्रतिभागियों को धन्यवाद देते हुए वृष्टि वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट तथा इसके अंतर्गत बांस रत्न अनुसंधान केंद्र के कार्यों तथा भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद देहरादून में उसकी भूमिका से अवगत कराया साथ ही बांस की कुछ प्रजातियों से भी रूबरू कराया। तत्पश्चात सहायक महानिदेशक विस्तार ने परिषद की स्थापना तथा इसके उद्देश्य यथा वन विज्ञान केंद्र, कृषि विज्ञान केंद्र, डेमो विलेज, वृक्ष उपजाओ मेले आदि से अवगत कराते हुए लाख की खेती से भी विशेषतः अवगत कराया। वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. अनीता तोमर ने प्रयागराज केंद्र में चल रहे अनुसंधान कार्यों के साथ विभिन्न परियोजनाओं द्वारा पूर्वी उत्तर प्रदेश में वानिकी के विकास से पर्यावरण में हस्तक्षेप से अवगत कराया। इस अवसर पर प्रगतिशील किसान आनंद ओझा द्वारा सहजन की पत्तियों से तैयार किए जा रहे चूर्ण पर विस्तृत चर्चा की गई, उन्होंने बताया कि हमारे क्षेत्र में इस प्रजाति को विशेष रूप से बढ़ावा दिया जा रहा है। विभिन्न सत्रों का सचालन आलोक यादव तथा डॉ. अनुभा श्रीवास्तव ने कुशलता से किया। इस संगोष्ठी में जोरहाट असम, अगरतला, आइजोल, देहरादून तथा प्रयागराज संस्थानों के लगभग 50 लोगों ने अपने अनुभव बताए तथा देश भर से 500 से अधिक प्रतिभागी सम्मिलित हुए।

एक दिवसीय राष्ट्रीय वेबीनार का आयोजन

प्रयागराज। पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केंद्र (भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून) प्रयागराज तथा वन अनुसंधान केंद्र, अगरतला द्वारा संयुक्त रुप से अनलॉक-५ के दौरान वानिकी प्रयासों के माध्यम से आजीविका में वृद्धि विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय वेबीनार का आयोजन किया गया।

उद्घाटन भाषण में कार्यक्रम के अध्यक्ष डा. सुधीर कुमार उपमहानिदेशक विस्तार ने भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून के अंतर्गत कार्यरत संस्थानों तथा उनके केंद्रों द्वारा वानिकी आधारित आजीविका उपार्जन पर बल दिया जिससे ग्रामीण क्षेत्रों के आर्थिक विकास के साथ-साथ पर्यावरण सुरक्षा को भी बढ़ावा मिले। डा.आर. सी. जयराज, निदेशक वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट (असम) ने बांस की विभिन्न प्रजातियों से तैयार हस्तशिल्प वस्तुओं तथा लाख की खेती से होने वाले लाभों से अवगत कराया। पवन कुमार कौशिक, वैज्ञानिक एवं आगंतुक विस्तार वन अनुसंधान केंद्र, अगरतला द्वारा धन्यवाद व्यक्त किया गया।

इसी क्रम में अपने मंतव्य व्याख्यान में डा. संजय सिंह प्रमुख ने लाख की खेती विषय पर चर्चा करते हुए भारत में उपलब्धि प्रतिशत के साथ-साथ इसकी कुछ प्रजातियों से भी अवगत कराया। उन्होंने प्रयागराज केंद्र की अनुसंधान पौधशाला में लाख की खेती हेतु तैयार हो रहे मॉडल से भी अवगत कराया। उन्होंने स्वावलंबन रोजगार के अंतर्गत बांस से तैयार हस्तशिल्प वस्तुओं से धन अर्जन पर विस्तृत चर्चा की। तत्पश्चात उन्होंने औषधीय पौधों के अंतर्गत सहजन पर विशेष चर्चा करते हुए उसके महत्व पर प्रकाश डाला तथा इसके रोपण हेतु सभा से अनुरोध भी किया। कार्यक्रम में केंद्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. कुमुद दूबे ने वेबीनार प्रतिभागियों को धन्यवाद देते हुए वृष्टि वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट तथा इसके अंतर्गत बांस रत्न अनुसंधान केंद्र के कार्यों तथा भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद देहरादून में उसकी भूमिका से अवगत कराया साथ ही बांस की कुछ प्रजातियों से भी रूबरू कराया। सहायक महानिदेशक विस्तार ने परिषद की स्थापना तथा इसके उद्देश्य यथा वन विज्ञान केंद्र, कृषि विज्ञान केंद्र, डेमो यूनिट, वृक्ष उपजाओं मेले आदि से अवगत कराते हुए लाख की खेती से भी विशेषतः अवगत कराया। वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. अनीता तोमर ने प्रयागराज केंद्र में चल रहे अनुसंधान कार्यों के साथ विभिन्न परियोजनाओं द्वारा पूर्वी उत्तर प्रदेश में वानिकी के विकास से पर्यावरण में हस्तक्षेप से अवगत कराया। इस अवसर पर प्रगतिशील किसान आनंद ओझा द्वारा सहजन की पत्तियों से तैयार किए जा रहे चूर्ण पर विस्तृत चर्चा की गई।

वानिकी प्रयासों से आजीविका में वृद्धि पर राष्ट्रीय वेबीनार

प्रयागराज। पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केंद्र (भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून) प्रयागराज तथा वन अनुसंधान केंद्र, अगरतला द्वारा संयुक्त रुप से अनलॉक-5 के दौरान वानिकी प्रयासों के माध्यम से आजीविका में वृद्धि विषय पर मंगलवार को एक दिवसीय राष्ट्रीय वेबीनार का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के अध्यक्ष उपमहानिदेशक विस्तार डॉ. सुधीर कुमार ने भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून के अंतर्गत कार्यरत संस्थानों तथा उनके केंद्रों द्वारा वानिकी आधारित आजीविका उपार्जन पर बल दिया। जिससे ग्रामीण क्षेत्रों के आर्थिक विकास के साथ-साथ पर्यावरण सुरक्षा को भी बढ़ावा मिले। वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट (असम) के निदेशक डॉ. आर.सी जयराज ने बांस की विभिन्न-प्रजातियों से तैयार हस्तशिल्प वस्तुओं तथा लाख की खेती से होने वाले लाभों से अवगत कराया। डॉ. संजय सिंह, प्रमुख ने लाख की खेती विषय पर चर्चा करते हुए भारत में उपलब्धि प्रतिशत के साथ-साथ इसकी कुछ प्रजातियों से अवगत कराते हुए प्रयागराज केंद्र की अनुसंधान पौधशाला में लाख की खेती हेतु तैयार हो रहे मॉडल से अवगत कराया। उन्होंने स्वावलंबन रोजगार के अंतर्गत बांस से तैयार हस्तशिल्प वस्तुओं से धन अर्जन पर चर्चा की। साथ ही औषधीय पौधों के अंतर्गत सहजन पर विशेष चर्चा करते हुए उसके महत्व पर प्रकाश डाला तथा इसके रोपण हेतु अनुरोध भी किया। कार्यक्रम में केंद्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. कुमुद दूबे ने वृष्टि वन अनुसंधान संस्थान जोरहाट तथा इसके अंतर्गत बांस रत्न-अनुसंधान केंद्र के कार्यों तथा भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद देहरादून में उसकी भूमिका से अवगत कराया। साथ ही बांस की कुछ प्रजातियों से भी रूबरू कराया। तत्पश्चात सहायक महानिदेशक विस्तार ने परिषद की स्थापना तथा इसके उद्देश्य से अवगत कराया। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर ने प्रयागराज केंद्र में चल रहे अनुसंधान कार्यों के साथ विभिन्न-परियोजनाओं द्वारा पूर्वी उत्तर प्रदेश में वानिकी के विकास से पर्यावरण में हस्तक्षेप से अवगत कराया। इस अवसर पर प्रगतिशील किसान आनंद ओझा ने सहजन की पत्तियों से तैयार किए जा रहे चूर्ण पर विस्तृत चर्चा करते हुए बताया कि हमारे क्षेत्र में इस प्रजाति को विशेष रूप से बढ़ावा दिया जा रहा है। वैज्ञानिक एवं आजीविका विस्तार वन अनुसंधान केंद्र, अगरतला पवन कुमार कौशिक ने धन्यवाद व्यक्त किया। विभिन्न सत्रों का संचालन आलोक यादव तथा डॉ. अनुभा श्रीवास्तव ने किया। संगोष्ठी में जोरहाट असम, अगरतला, आइजोल, देहरादून तथा प्रयागराज संस्थानों के लगभग 50 लोगों ने अपने अनुभव बताए तथा देश भर से 500 से अधिक प्रतिभागी सम्मिलित हुए।

वानिकी में रोजगार के बेहतर अवसर

प्रयागराज। पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केंद्र प्रयागराज तथा वन अनुसंधान केंद्र, अगरतला के संयुक्त तत्वावधान में वानिकी प्रयासों के माध्यम से आजीविका में वृद्धि विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन मंगलवार को हुआ। वक्ताओं ने कहा कि वानिकी के माध्यम से रोजगार के बेहतर अवसर पैदा किए जा सकते हैं। अध्यक्ष डॉ. सुधीर कुमार, उपमहानिदेशक, विस्तार, ने भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून के अंतर्गत कार्यरत संस्थानों तथा उनके केंद्रों द्वारा वानिकी आधारित आजीविका उपार्जन पर विचार रखे। डॉ. आर. सी. जयराज, निदेशक, वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट (असम), डॉ. संजय सिंह, वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. कुमुद दूबे, वैज्ञानिक डा. अनीता तोमर ने विचार रखे।

राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन

प्रयागराज : पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केंद्र प्रयागराज और वन अनुसंधान केंद्र अगरतला की ओर से मंगलवार को राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। वानिकी प्रयासों के माध्यम से आजीविका विषय पर आयोजित कार्यक्रम में अध्यक्षता कर रहे उपमहानिदेशक डा. सुधीर कुमार ने वानिकी आधारित आजीविका पर जोर दिया। वर्षा वन अनुसंधान संस्थान जोरहट असम के निदेशक डा. आरसी जयराज ने लाख की खेती से होने वाले लाभ से अवगत कराया। केंद्र प्रमुख डा. संजय सिंह ने अनुसंधान पीथशाला में लाख की खेती के लिए तैयार होने वाले मॉडल से अवगत कराया। जास